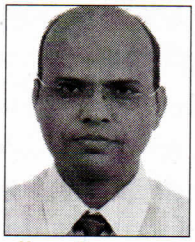

डॉ. सुशील अग्रवाल

साढ़े-साती की शुभाशुभ स्थिति और शास्त्रीय उपाय

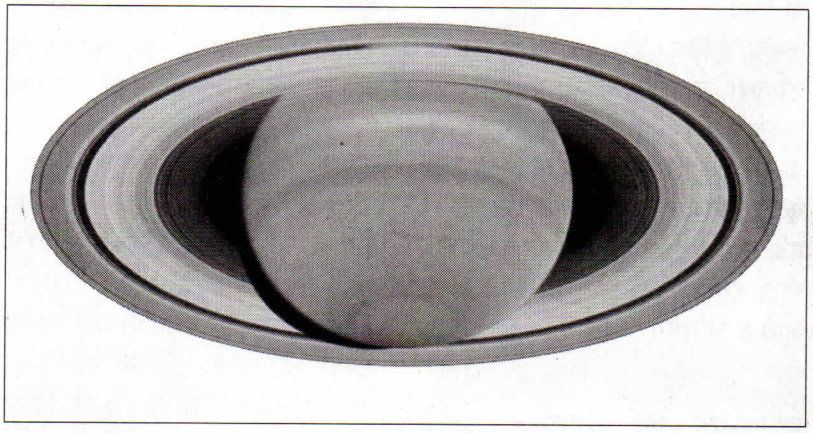

साढ़े-साती, शनि की उस गोचर अवस्था को कहते हैं जिसमें गोचरवश शनि जन्मकालीन चन्द्रमा से द्वादश भाव (आरोहम चरण) में प्रवेश करते हैं, जन्मकालीन चन्द्रमा (जन्म चरण) पर गोचर करते हैं और अंत में जन्मकालीन चन्द्रमा से द्वितीय (अवरोहम चरण) भाव में गोचर करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक भाव में शनि लगभग ढाई वर्ष रहते हुए लगभग साढ़े सात वर्ष की अवधि पूर्ण करते हैं। यही साढ़े-सात साल की अवधि शनि की साढ़े-साती कहलाती है।

शनि की यह गोचर अवस्था हर व्यक्ति की कुंडली में प्रत्येक तीस साल में बनती है। तो क्या दुनिया का हर व्यक्ति हर तीस साल में साढ़े–सात साल शनि के दुष्प्रभावों से ग्रसित होता है?

चन्द्रमा, मन के कारक होने के साथ–साथ एक छोटे एवं तीव्र गति से चलने वाले नैसर्गिक सौम्य ग्रह हैं और इसके बिलकुल विपरीत शनि अत्यन्त मंद गति से चलने वाले विशाल एवं नैसर्गिक अशुभ ग्रह हैं। दोनों के आस–पास या साथ–साथ होने से इनका परस्पर सामंजस्य नहीं हो पाता जिसके कारण मन को निराशा एवं दुःख की अनुभूति होती है परन्तु यह केवल उन्हीं स्थितियों में होगा जिसमें चन्द्र निर्बल और शनि अशुभ भावेश या पीड़ित होगा।

बृहज्जातक, फलदीपिका आदि ग्रंथों में चंद्रमा को मन का कारक मानते हुए चन्द्र लग्न को गोचर फलादेश में प्रधान माना गया है और जन्मकालीन चंद्रमा से III, VI, XI भावों के अतिरिक्त सभी भावों में शनि के गोचर को अशुभ फलदायी कहा गया है। अर्थात, साढ़े–साती सम्बंधित तीनों भावों (XII, I, II) में शनि गोचरवश अशुभ फलदायी होते हैं।

शनि और चन्द्र की युति को किसी भी ग्रंथ में शुभ नहीं माना गया है।

गोचरवश शनि की जन्मकालीन चन्द्रमा से XII, I, II की स्थिति अशुभ फलदायी होती है। परन्तु, गोचर तो उन्हीं फलों को प्रदान कर सकता है जो कुंडली में योगों और दशा द्वारा निर्धारित किये जाते हैं। अर्थात, फलित के सामान्य नियमों के आधार पर साढ़े–साती के प्रत्येक चरण का अलग–अलग विश्लेषण करने के पश्चात ही निष्कर्ष निकालना चाहिये कि क्या वह चरण शुभ होगा या अशुभ। गोचर फलादेश के भी दो नियम हैं, सामान्य (स्थूल) नियम व विशेष (सूक्ष्म) नियम और सामान्य नियम से विशेष नियम सदैव

बलवान होता है। जैसे, योग, दशा और सामान्य गोचर नियम द्वारा फल अशुभ प्रतीत होता हो तो सूक्ष्म नियम "अष्टकवर्ग पद्धति" द्वारा पुष्टि अवश्य करनी चाहिए। अष्टकवर्ग पद्धति से पुष्टि करने से फलादेश में अधिक सटीकता आयेगी क्योंकि इससे परिणाम में बदलाव आने की भी सम्भावना होती है जैसे अशुभता में न्यूनता/अधिकता, अशुभता का स्थगन, शुभता में अधिकता/न्यूनता या शुभता का स्थगन आदि। अर्थात, समुदायाष्टकवर्ग स्थूल रूप से शनि की गोचरवश भाव स्थिति अनुसार शुभता–अशुभता बताता है। भिन्नाष्टक वर्ग में उसी भाव के अंकों द्वारा उस फल की सूक्ष्म रूप से पुष्टि होती है और प्रस्तारक वर्ग की कक्षा से उस सूक्ष्म रूप शुभ–अशुभ फल की अवधि का पता चलता है क्योंकि एक चरण के ढाई वर्ष में फलों की शुभता और अशुभता में उतार–चढ़ाव हो सकता है।

इसके अतिरिक्त, प्रत्येक ग्रह अपने स्वभाव एवं स्वामित्व अनुसार शुभ–अशुभ फल देते हैं। इस आधार पर, शनि भी कुंडली अनुसार शुभ या अशुभ होते हैं। जैसे शनि, वृषभ और तुला लग्न में योगकारक होते हैं या फिर शुभस्थानगत होते हुए उच्च, मूल त्रिकोण, स्वराशि, वर्गोत्तम आदि हों तो शनि जातक के लिये शुभ फलप्रद होते हैं। अपनी शुभ स्थिति में शनि मन–बुद्धि की एकाग्रता, आध्यात्मिकता में रुझान, प्रगति, मुखिया पद, नौकरी एवं व्यवसाय में धीरे–धीरे उन्नति, न्यायप्रिय एवं उदारवादी दृष्टिकोण आदि देते हैं। पराशर जी के योग कारकाध्याय के अनुसार : त्रिकोण (लग्न, पंचम एवं नवम) भाव में स्वामी हमेशा शुभ फल देते हैं अर्थात अगर किसी जातक की कुंडली में चन्द्रमा या शनि किसी भी त्रिकोण के स्वामी हों तो वह अपनी दशा में शुभ फलप्रद तो होंगे ही और भावेश के रूप में इनका गोचर भी कष्टकारक नहीं होगा। निम्न सारणी में देखेंगे तो अग्नि तत्व (मेष, सिंह, धनु) राशि में शनि और चन्द्र दोनों ही किसी भी शुभ भाव के स्वामी नहीं हैं इसीलिए प्रतिकूल दशा आने पर साढ़े–साती में अशुभ फल मिलने की सम्भावना प्रबल हो जाती है। अगर कुंडली में अशुभता के योग भी उपस्थित हों तो अन्य लग्नों में शनि और चन्द्र में से कम से कम एक शुभ भावेश है जो शुभ फल देने की प्रवृत्ति रखेगा अगर वह पीड़ित और अशुभ अवस्थित न हो तो।

राशि	निष्कर्ष
मेष	कोई लग्नेश, पंचमेश या नवमेश नहीं
वृषभ	शनि योगकारक
मिथुन	शनि नवमेश
कर्क	चन्द्र लग्नेश
सिंह	कोई लग्नेश, पंचमेश या नवमेश नहीं
कन्या	शनि पंचमेश
तुला	शनि योगकारक
वृश्चिक	चन्द्र नवमेश
धनु	कोई लग्नेश, पंचमेश या नवमेश नहीं
मकर	शनि लग्नेश
कुम्भ	शनि लग्नेश
मीन	चन्द्र पंचमेश

उपाय : अगर कुंडली में चन्द्र निर्बल हो, शनि अशुभ फलप्रद हो, प्रतिकूल दशा हो और शनि की साढ़े–साती भी हो तो क्या उपाय करने चाहिए? पद्म पुराण, उत्तरखण्ड में शनि महाराज ने राजा दशरथ को इस प्रकार कहा "जो श्रद्धा से युक्त, पवित्र और एकाग्रचित्त हो मेरी लौहमयी सुन्दर प्रतिमा का शमीपत्रों से पूजन करके तिलमिश्रित उड़द–भात, लोहा, काली गौ या काला वृषभ ब्राह्मण को दान करता है तथा विशेषतः शनिवार को मेरी पूजा करता है और पूजन के पश्चात् हाथ जोड़कर मेरे स्तोत्र का जाप करता है, उसे मैं कभी भी पीड़ा नहीं दूंगा। गोचर में, जन्म लग्न में, दशा तथा अन्तर्दशा में ग्रह–पीड़ा का निवारण करके मैं सदा उसकी रक्षा करूँगा"। ❐

पता : बी–301, सोम अपार्टमेंट्स, सेक्टर–6, प्लॉट–24, द्वारका, नयी दिल्ली– 110075
दूरभाष : 9810162371

कंप्यूटर जन्माक्षर
विश्व प्रसिद्ध सॉफ्टवेयर लियो गोल्ड द्वारा निर्मित

- नवजात शिशुओं के लिये भाग्यशाली नाम एवं नक्षत्रफल
- विवाह के लिए कुंडली मिलान
- लाल किताब के सरल उपाय
- अंकशास्त्र
- एस्ट्रोग्राफ एवं प्रश्नफल

नोट : यहां फ्यूचर पॉइंट की ज्योतिषीय सामग्री भी मिलती है।

संपर्क : कुसुम गर्ग,
B-16, Shreeji Bunglows,
Sun Pharma Road,
Vadodara-390020, Gujarat
Phone :
02692-237568, 09327744699